वर्ष-8 अंक 51 | 12 अगस्त से 18 अगस्त 2024 तक | पृष्ठ-12

RNI.NO-MPHIN/2015/63623

www.newscrimefile.com

साप्ताहिक

न्यूज क्राइम फाइल

आमंत्रण मुल्य 15/-

ग्वालियर, भिंड, मुरैना, छतरपुर, सागर, विदिशा, रायसेन, सिवनी, जबलपुर, रीवा, सतना, होशंगाबाद, हरदा एवं इंदौर में प्रसारित।

आजादी की कहानी...

उदय प्रताप सिंह चौहान

आजादी से पहले की कहानी बहुत उलझी हुई है। खासकर जब कांग्रेस-भाजपा एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते हैं तो समझ नहीं आता कि कौन सही है और कौन गलत? महापुरुषों को प्रतीक के रूप में इस्तेमाल करते हुए यह पार्टियां भी आजादी की कहानी को उलझा देती हैं। इस वजह से इतिहास की सही तस्वीर सामने नहीं आ पाती। युवाओं की जानकारी भी कुछ नामों पर जाकर ठिठक जाती है।

1. ईस्ट इंडिया के आगमन से प्लासी (1600-1757)

■ आजादी को समझना है तो गुलाम बनने की कहानी भी जरूरी है। जब ईस्ट इंडिया कंपनी को 1600 में ब्रिटिश महारानी से कारोबार की इजाजत मिली तब तक भारत में फ्रेंच, पुर्तगाली और डच कब्जा जमा चुके थे।

■भारत से सूती कपड़े, रेशम, काली मिर्च, लौंग, इलायची और दालचीनी यूरोप जाने लगा था। ईस्ट इंडिया कंपनी का जहाज 1608 में सूरत पहुंचा। वहां पुर्तगालियों को डच ईस्ट इंडिया कंपनी की मदद से रास्ते से हटाया।

■फिर मुगल शासक जहांगीर से रिश्तों को मजबूती दी। यूरोपीय वस्तुओं के बदले भारतीय शासकों का दिल जीता। धीरे-धीरे कूटनीति के जरिये उनके राजनीतिक मामलों में दखल शुरू किया। ताकत भी बढ़ाते रहे।

■कंपनी ने मुगल से टैक्स में छूट प्राप्त कर ली थी। अब अफसर भी निजी कारोबार करने लगे थे और वे टैक्स नहीं चुकाते थे। इसका बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने विरोध किया। कलकत्ता में ब्रिटिश संपत्ति पर कब्जा जमा लिया। अधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया।

■तब कंपनी का एक और गढ़ था मद्रास (आज का चेन्नई) में। वहां से रॉबर्ट क्लाइव नौसेना लेकर आए और 1757 में सिराजुद्दौला से प्लासी का युद्ध लड़ा। सिराजुद्दौला के सेनापति मीर जाफर ने विश्वासघात किया और युद्ध में नवाब की मौत हो गई।

2. कंपनी बहादुर से पहले स्वतंत्रता संग्राम (1757-1857)

जल्द ही कंपनी को लगने लगा कि कठपुतली नवाब काम नहीं आएंगे। सत्ता अपने हाथ में होनी चाहिए। तब 1765 में मीर जाफर की मौत के बाद कंपनी ने रियासत अपने हाथ में ली। मुगल सम्राट ने कंपनी को बंगाल का दीवान बना दिया यानी फ्कंपनी बहादुरफ्र अस्तित्व में आया। अंग्रेजों के सामने दो बड़ी चुनौतियां तब भी थीं। दक्षिण में टीपू सुल्तान और विंध्य के दक्षिण में मराठा। टीपू ने फ्रेंच व्यापारियों से दोस्ती कर ली थी। सेना को आधुनिक बना लिया था। वहीं, मराठा दिल्ली के जरिए देश पर शासन करना चाहते थे। कंपनी ने टीपू और उनके पिता हैदर अली से चार युद्ध लड़े। लेकिन 1799 में टीपू श्रीरंगपट्टनम की जंग में मारे गए। इसी तरह, पानीपत की तीसरी लड़ाई में हार के बाद मराठा साम्राज्य टुकड़ों में बंटा था। 1819 में अंग्रेजों ने पेशवा को पुणे से लाकर कानपुर के पास बिठुर में बिठा दिया। इस बीच, पंजाब बड़ी चुनौती बना रहा था। महाराजा रणजीत सिंह जब तक रहे, तब तक उन्होंने अंग्रेजों की दाल नहीं गलने दी। लेकिन 1839 में उनकी मौत के बाद हालात बदल गए। दो लड़ाइयां और हुई और दस साल बाद पंजाब पर अंग्रेज काबिज हो गए। 1848 में लॉर्ड डलहौजी विलय नीति लेकर आए। जिस शासक का कोई पुरुष उत्तराधिकारी नहीं होता था, उस रियासत को कंपनी अपने कब्जे में ले लेती। इस आधार पर सतारा, संबलपुर, उदयपुर, नागपुर और झांसी पर अंग्रेजों ने कब्जा जमाया। इसने 1857 की क्रांति के बीज बोए।

■सीताराम पांडे ने फॉम सिपॉय टू सुबेदारफ्र संस्मरण में लिखा है कि यह सबको लग रहा था कि अंग्रेज भारतीय धर्मों का सम्मान नहीं करते। नाराजगी तो थी लेकिन जब यह खबर आई

कि नई बंदूकों के कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी का लेप है तो कंपनी में सिपाही भड़क गए।

■1857 में मेरठ में सिपाही विद्रोह के चलते मंगल पांडे को फांसी पर चढ़ाया गया। वहां से उठी चिंगारी ने झांसी, अवध, दिल्ली, बिहार में क्रांति को हवा दी। रानी लक्ष्मीबाई, बहादुर शाह जफर, नाना साहेब आदि ने मिलकर एक साथ बगावत कर दी। अंग्रेजों को खदेड़ दिया गया था।

■1765 में मुगल शासक शाह आलम ने रॉबर्ट क्लाइव को दीवानी सौंपी थी। इससे ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल, बिहार और आज के ओडिशा से टैक्स वसूलने का अधिकार मिल गया था। यह पेंटिंग्स बेंजामिन वेस्ट ने 1818 में बनाई है।

3. इंग्लैंड की महारानी के शासन से गांधी तक (1858-1915)

■ कंपनी ने तब लंदन से फौज बुलवाई। सितंबर-1857 में दिल्ली में फिर अंग्रेजों का कब्जा हुआ। मार्च-1858 में लखनऊ, जून-1858 में झांसी पर अंग्रेज फिर हावी हुए। ब्रिटिश संसद ने कानून पारित किया और भारत की सत्ता ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथ से महारानी के हाथ में चली गई।

■ब्रिटिश मंत्रिमंडल के सदस्य को भारत का मंत्री बनाया गया। उसकी मदद के लिए इंडिया काउंसिल बनाई गई। गवर्नर जनरल अब वायसराय था यानी इंग्लैंड के राजा-रानी का निजी प्रतिनिधि। इस तरह, अंग्रेज सरकार ने सीधे-सीधे भारत की बागडोर संभाल ली।

■1858 में जब ब्रिटिश राज आया तब उसके कब्जे में आज का भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान और बर्मा था। वहीं, गोवा और दादर नगर हवेली पुर्तगाली कॉलोनी थे जबकि पुडुचेरी फ्रेंच कॉलोनी।

■ब्रिटिश शासन आते ही तटीय इलाकों यानी मद्रास, बॉम्बे, कलकत्ता और इसके आसपास के पुणे जैसे शहर पढ़ाई-लिखाई के बड़े केंद्र बन गए। वहां संभ्रांत भारतीय परिवारों के युवा पढ़-लिख रहे थे। इसी दौरान सामाजिक सुधार शुरू हुए।

■दिसंबर-1885 में रिटायर्ड ब्रिटिश अधिकारी एलेन ओक्टोवियन ह्यूम ने ब्रिटिश शासन और भारत की सिविल सोसायटी में समन्वय की भूमिका निभाने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस बनाई। इसका उद्देश्य आजादी की लड़ाई लड़ना नहीं बल्कि ब्रिटिश शासन में अपनी भूमिका निभाना था।

■सुरेंद्रनाथ बनर्जी कलकत्ता में, महादेव गोविंद रानाड़े पूना में सक्रिय हुए। प्रार्थना समाज, आर्य समाज जैसे संगठन सक्रिय हुए। इसी दौरान 1906 में ढाका में मुस्लिम लीग ने आकार लिया। यह सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक संगठन ही आगे राष्ट्रवादी चेतना की प्रेरणा बने।

■1905 में लॉर्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन किया। इससे बंगाल भड़क उठा। कांग्रेस नेतृत्व ने इसे फ्बांटो और राज करोफ्र की नीति बताया। बंगाल से उठी राष्ट्रवाद की प्रचंड धारा से वंदे मातरम कांग्रेस का राष्ट्रगीत बना। बंकिम चंद्र चटर्जी के उपन्यास आनंद मठ से लिए इस गीत को रबींद्र नाथ टैगोर ने संगीतबद्ध किया था।

■बंगाल में कलकत्ता समेत सभी इलाकों में विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। पूरे देश में फ्बंग भंगफ्र आंदोलन की चिंगारी पहुंच गई। यह आग पूना, मद्रास और बॉम्बे में भी फैली। अंग्रेजी पढ़ाई का विरोध हुआ। पंडित मदन मोहन मालवीय ने 1910 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की।

■वहीं, ब्रिटेन में भी हालात बदल रहे थे। 1906 में लिबरल पार्टी ने चुनाव जीते और भारत को देखने का नजरिया बदला। कम से कम दिखाया तो ऐसा ही। वायसराय लॉर्ड मिंटो और भारत के लिए मंत्री जॉन मोर्ली ने सुधार लागू किए। भारतीयों को राजनीति और शासन में हिस्सेदारी दी गई।

■1910 में सुप्रीम काउंसिल में भारतीय सदस्य बढ़ गए। गोपालकृष्ण गोखले जैसे नेता उससे जुड़े। उन्होंने इस पर कहा था कि इससे पहले तक वे बाहर से हमला करते रहे, लेकिन अब अंदर से हमले भी कर सकेंगे।

■पर इससे पहले ही 1907 में कांग्रेस दो धड़ों में टूट गई थी। गरम दल और नरम दल। नरम दल सरकार के साथ रहकर काम करना चाहता था। **शेष भाग पेज 2 पर पढ़े**

महात्मा गांधी: महात्मा गांधी भारत के शीर्ष स्वतंत्रता सेनानियों की आधारशिला हैं, जो देश की स्वतंत्रता की खोज में एक प्रतीक हैं। अहिंसा और सविनय अवज्ञा के लिए उनके नेतृत्व ने एक ऐसे आंदोलन को जन्म दिया जो सीमाओं से परे चला गया और जिसने दुनिया पर एक अमिट छाप छोड़ी। गांधी के दर्शन में सामाजिक सुधार को शामिल किया गया।

हम कैसे गुलाम बने, कैसे मिली आजादी

पेज 1 का शेष भाग

वहीं, गरम दल में फ्लाल-पाल-बाल की तिकड़ी थी। यानी लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्र पाल।

■तिलक ने क्रांतिकारी प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस के बम हमलों का समर्थन किया। उन्हें बर्मा की जेल भेज दिया गया। उसके बाद पाल और अरविंद घोष ने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया। धीरे-धीरे यह उग्र राष्ट्रवादी आंदोलन भी कमजोर पड़ गया। 1928 में लाला लाजपत राय की भी अंग्रेजों के लाठीचार्ज में मौत हो गई।

■1911 में मिंटो की जगह लॉर्ड हार्डिंग्ज आए और उन्होंने विभाजित बंगाल को एक कर दिया। लेकिन, बिहार और ओडिशा को अलग कर नया प्रांत बना दिया। राजधानी भी कलकत्ता से उठाकर दिल्ली ले आए। मुस्लिम लीग की मांग पर परिषदों में कुछ सीटें मुस्लिमों के लिए आरक्षित रखी गई।

4. महात्मा गांधी से आजादी की लड़ाई तक
(1915-1947)

■मोहनदास करमचंद गांधी यानी बापू 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटे। वे वहां नस्लभेदी पाबंदियों के खिलाफ अहिंसक आंदोलन के प्रणेता थे। गोपालकृष्ण गोखले की सलाह पर उन्होंने सबसे पहले पूरे भारत का दौरा किया।

■भारत का दौरा करने के बाद वे चंपारण, खेड़ा और अहमदाबाद के स्थानीय आंदोलनों से जुड़े। 1919 में रॉलट कानून के खिलाफ सत्याग्रह किया। यह ब्रिटिश शासन के खिलाफ पहला एकजुट आंदोलन था।

■आंदोलनों को दबाने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों ने दमनकारी हथकंडे अपनाए। अप्रैल 1919 में बैसाखी के दिन जलियांवाला बाग में जुटे प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाई। इसमें 400 से अधिक लोग मारे गए थे।

■जलियांवाला बाग हत्याकांड और खिलाफत आंदोलन की पृष्ठभूमि में 1920-21 में असहयोग आंदोलन शुरू हुआ। विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाने लगी। देश के अलग-अलग हिस्सों के छुटपुट आंदोलन भी इससे जुड़ते चले गए।

■फरवरी 1922 में किसानों ने चौरी-चौरा पुलिस थाने को आग लगा दी। 22 पुलिस वाले मारे गए। तब गांधीजी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया। महत्वपूर्ण यह भी है कि इसी दशक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी जैसे परस्पर विरोधी विचारों के दल भी बने।

■उस समय कांग्रेस पूरी तरह से गांधी जी के प्रभाव में थी। जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस ने 1929 में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित किया। 26 जनवरी 1930 को पूरे देश ने स्वतंत्रता दिवस भी मनाया।

■इस दौरान भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव और अन्य मजदूरों और किसानों की क्रांति चाहते थे। हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी भी बनाई थी। लाला लाजपत राय को पुलिस लाठीचार्ज में मौत के घाट उतारने वाले पुलिस अफसर सांडर्स की 17 दिसंबर 1928 को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव ने हत्या कर दी।

■इसके बाद बीके दत्त के साथ मिलकर भगत सिंह ने 8 अप्रैल 1929 को केंद्रीय विधान परिषद में बम फेंका। क्रांतिकारियों ने पर्चे में लिखा था कि उनका मकसद किसी की जान लेना नहीं बल्कि बहरों को सुनाना है। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को 23 मार्च 1931 को फांसी पर चढ़ाया गया।

■इधर, गांधी जी ने 1930 में साबरमती से 240 किमी दूर स्थित दांडी तट तक मार्च किया। उन्होंने अंग्रेजों के नमक पर टैक्स वसूलने वाले कानून का विरोध किया। इसमें लोगों ने बड़े पैमाने पर उनका साथ दिया। यहीं से सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ।

■भारत में हर स्तर पर राष्ट्रीय चेतना बढ़ गई थी, तब 1935 में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट बना। प्रांतों को स्वायत्तता दी गई। 1937 में चुनाव हुए तो 11 में से 7 प्रांतों में कांग्रेस की सरकार बनी थी।

■1939 में दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ गया। कांग्रेस के नेता ब्रिटेन की मदद करना चाहते थे, लेकिन बदले में भारत की स्वतंत्रता की मांग कर रहे थे। अंग्रेजों ने बात नहीं मानी तो कांग्रेस सरकारों ने इस्तीफे दे दिए।

■महात्मा गांधी ने दूसरे विश्व युद्ध के बाद भारत छोड़ो का नारा दिया। इसे दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार को पसीना आ गया। कई इलाकों में तो लोगों ने अपनी सरकार तक बना ली थी। हालांकि, इस समय तक महात्मा गांधी की कांग्रेस पर पकड़ कमजोर हो गई थी।

■इस बीच, सुभाषचंद्र बोस ने कांग्रेस नेताओं से मतभेद उभरने पर पार्टी छोड़ी और 1941 में जर्मनी के रास्ते सिंगापुर पहुंचे। वहां आजाद हिंद फौज बनाई। यह फौज 1944 में इम्फाल और कोहिमा के रास्ते भारत में प्रवेश करने में नाकाम हुई। अधिकारी गिरफ्तार हो गए।

■दूसरे विश्वयुद्ध के बाद 1945 में अंग्रेजों ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग से स्वतंत्रता पर बातचीत शुरू की। लीग चाहती थी कि उसे भारतीय मुसलमानों का प्रतिनिधि माना जाए, लेकिन कांग्रेस राजी नहीं थी। दोनों के बीच मतभेद भारत और पाकिस्तान में विभाजन का कारण बने। 14 अगस्त को पाकिस्तान और 15 अगस्त को भारत स्वतंत्र देश बन गए।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद: मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का राष्ट्र के प्रति समर्पण भारत की आज़ादी से कहीं आगे तक फैला हुआ था। 16 साल की छोटी उम्र में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले, वे जीवन भर एक सक्रिय व्यक्ति बने रहे। कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व किया।

भोपाल आंदोलन के तीन मुख्य चेहरे...

विलीनीकरण आंदोलन के नेता और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा के पुश्तैनी मकान छोटे भाई ईश्वरदयाल शर्मा (लेफ्ट) और शंभुदयाल शर्मा (राइट)

विलीनीकरण के मुख्य प्रणेता भाई रतन कुमार के बेटे डॉ. आलोक कुमार गुप्ता

संजीव कुमार

देश को आजादी मिलने के बाद भी भोपाल नवाब ने इसका भारत में विलय नहीं किया। बकौल आंदोलनकारी इस दौरान 12 से अधिक युवाओं ने अपनी जान गवाई। 10 हजार से अधिक लोग आंदोलन में शामिल हुए। खुली और बंद जेलों में हजारों को बंद किया। तब जाकर 659 दिन बाद भोपाल पूरी तरह से आजाद हुआ और इसका भारत में विलय हुआ। जिन लोगों ने इस आंदोलन की कमान संभाली, अब वे जन-जन तक इस इतिहास को पहुंचाना चाहते हैं। इनमें से विलीनीकरण आंदोलन के जो तीन मुख्य किरदार रहे, पहली बार उनके परिवार से बात की और जाना कि अब वे क्या कर रहे हैं? इनमें हिन्दु महासभा के नेता वैद्य भाई उद्धवदास मेहता, पूर्व राष्ट्रपति व कांग्रेस नेता डॉ. शंकरदयाल शर्मा और पत्रकार व समाज सेवी भाई रतन कुमार शामिल थे।

भोपाल के साथ हिंदुओं की आजादी का आंदोलन था

भोपाल विलीनीकरण आंदोलन में हिन्दु महासभा की तरफ से नेतृत्व करने वाले उद्धवदास मेहता थे। यह अपने पिता की अकेली संतान थे और इनके 11 संतान हुई। इनमें कृष्णकांत, त्रिभुवनदास, ओम मेहता, रामगोपाल, गोविंददास और शरद मेहता। वहीं चार बेटियों में विमला शुक्ला, निर्मला पंडया, सरला शर्मा, इंदु रावत और एक अन्य शामिल हैं। परिवार की तीन पीढ़िया वैद्य का काम करती आ रही हैं। अब गोविंददास और शरद के बेटे इंजीनियरिंग में चले गए हैं। जबकि त्रिभुवन और रामगोपाल के बेटे डॉक्टरी कर रहे हैं। रामगोपाल बताते हैं कि भोपाल रियासत की लड़ाई आजादी से कई साल पहले की है। यहां हिंदुओं की दुर्दशा थी, इसलिए भाई पहले ही सक्रिय हो गए। जब भोपाल रियासत का विलय भारत में नहीं हुआ तो उन्होंने इसे महाआंदोलन बना दिया। वे बताते हैं कि यह इतिहास इतना बड़ा है कि इसे बच्चों तक पहुंचाने के लिए अब वे और उनका परिवार प्रयास कर रहा है।

इतिहास को पक्का करने के लिए देश भर के आर्काइव को खंगाला

पत्रकार और क्रांतिकारी रहे भाई रतन कुमार की 8 संतान हैं। इनमें कमला मित्तल, विमला अग्रवाल, इंद्रकुमार गुप्ता, मुकुल कुमार, अरविंद कुमार, आलोक गुप्ता और अलका अग्रवाल शामिल हैं। इनमें से कमला मित्तल ने पहली बार भोपाल विलीनीकरण पर पुस्तक लिखी, जिसे गूगल ने अपने प्रोजेक्ट के लिए शामिल किया। कमला हमीदिया कॉलेज में इतिहास की प्रोफेसर थी। उनके बाद विलीनीकरण के इतिहास पर डॉ. आलोक कुमार काम कर रहे हैं। यह रतन कुमार की सातवीं संतान हैं और गांधी मेडिकल कॉलेज में मेडिसिन डिपार्टमेंट में पदस्थ रहे। उन्होंने बताया कि वर्ष 1998 से इसकी शुरूआत की, क्योंकि भोपाल में नवाब परिवार से जुड़े लोग ही इतिहास लिखते आए हैं, जिसकी वजह से विलीनीकरण की पूरी हकीकत लोगों तक नहीं पहुंच पाई। इसी चक्कर में डॉ. गुप्ता ने कोलकाता, अहमदाबाद, दिल्ली के नेशनल आर्काइव में जाकर उन दस्तावेजों को निकाला, जिनमें नवाब की नीयत के बारे में खुला जिक्र है। वे बताते हैं कि दस्तावेज सर्च करने के लिए उन्होंने एक किट बनाई थी। एक थैले में एक ब्रश, दो कपड़े, दो पानी की बोतल होती थी। किताबों से धूल हटाते और फिर उसकी डिजीटल फोटोग्राफी करते। पूरा रिकार्ड तैयार करके अब वे भाई रतन कुमार के साथ अन्य दूसरे सेनानियों की पूरी गाथा का दस्तावेजी करण कर रहे हैं।

तीन पीढ़ी से कर रहे हैं वैद्य का काम, चाहते हैं कि भोपाल का हर बच्चा विलीनीकरण का इतिहास जाने

वैद्य उद्धवदास मेहता के बेटे राम गोपाल मेहता

पुराने शहर के इतवारा के पास गुलिया दाई की गली में पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा का निवास बना है। इस परिवार की दो पहचान है, पहली कि यह पुश्तैनी वैघ रहे हैं और दूसरी विलीनीकरण के आंदोलन से परिजन जुड़े हैं। शंकरदयाल कुल पांच भाई में सबसे बड़े थे। उनसे छोटे भाई में शम्भुदयाल और ईश्वरदयाल अभी वैद्य हैं और अब भी लोगों का इलाज करते हैं। शंभुदयाल स्वास्थ्य विभाग में संयुक्त संचालक पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। वे बताते हैं कि बचपन में नवाब शासन के खिलाफ वानर सेना का नेतृत्व करने का मौका मिला। यूनानी शफाखाना के पास बच्चों की सभाए होती थी और पुलिस के आते ही जो घर खाली दिखे, वहां घुस जाते थे। लेकिन यह इतिहास लोगों तक नहीं पहुंच पाया। वे चाहते हैं कि विलीनीकरण आंदोलन का पूरा इतिहास शहर के हर बच्चे को पढ़ाया जाना चाहिए।

1 जून 1949 को आजाद हुआ था भोपाल

भोपाल रियासत की पूरी कहानी। दरअसल इस रियासत के नवाब इसे पाकिस्तान का हिस्सा बनाना चाहते थे। 1 जून 1949 को यह भारत का हिस्सा बना और यहां पहली बार तिरंगा लहराया गया। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल की पहचान आज भी नवाबों के शहर के रूप में होती है। यहां नवाबों का राज रहा है और इनकी सल्तनत अंग्रेजों के इशारे पर चलती थी। रियासत की स्थापना 1723-24 में औरंगजेब की सेना के योद्धा दोस्त मोहम्मद खान ने सिहोर, आष्टा, खिलचीपुर और गिन्नौर को जीत कर की थी। 1728 में दोस्त मोहम्मद खान की मौत के बाद उसके बेटे यार मोहम्मद खान भोपाल रियासत के पहले नवाब बने।

सावित्रीबाई ज्योति राव फुले : 3 जनवरी, 1831 को जन्मी सावित्रीबाई ज्योति राव फुले महाराष्ट्र में एक प्रमुख सुधारक, शिक्षाविद और कवि के रूप में उभरीं। भारत की पहली महिला शिक्षिका, उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर महिलाओं के अधिकारों को आगे बढ़ाया, पुणे में पहला आधुनिक भारतीय लड़कियों का स्कूल स्थापित करने की पहल की।

आलेख

राष्ट्रप्रेम का ज्वार, अखंड भारत का सपना हो सकार

वर्तमान में जब कहीं से भी देश को तोड़ने की बात आती है तो स्वाभाविक रूप से उसका प्रतिकार भी जबरदस्त तरीके से होता है। यह प्रतिकार निश्चित रूप से उस राष्ट्रभक्ति का परिचायक है, जो इस भारत देश को देवभूमि भारत के रूप में प्रतिस्थापित करने का प्रमाण प्रस्तुत करने का अतुलनीय सामर्थ्य रखती है। यह आज के समय की बात है, लेकिन हम उस कालखंड का अध्ययन करें, जब भारत का विभाजन दर विभाजन हुआ। उस समय के भारतीयों के मन में विभाजन का असहनीय दर्द हुआ। जो असहनीय पीड़ा के रूप में उनके जीवन में प्रदर्शित होता रहा और देश को जगाते-जगाते वे परलोक गमन कर गए। अभी तक भारत देश के सात विभाजन हो चुके हैं। जरा कल्पना कीजिए कि अगर आज भारत अखंड होता तो वह दुनिया की महाशक्ति होता। उसके पास मानव के रूप में जनशक्ति का प्रवाह होता। लेकिन विदेशी शक्तियों ने भारत के कुछ महत्वाकांक्षी शासकों को प्रलोभन देकर भारत पर एकाधिकार किया और योजना पूर्वक भारत को कमजोर करने का प्रयास किया। आज जिस भारत की तस्वीर हम देखते हैं, वह अंग्रेजों और उन जैसी मानसिकता रखने वाले लालची भारतीयों द्वारा किए गए कुकृत्यों का परिणाम ही है।

बावजूद इसके आज भी भारत में एक वर्ग ऐसा भी है, जिनकी आंखों में अखंड भारत का सपना है। उनके मन में अखंड भारत बनाने का संकल्प है। इसी संकल्प के आधार पर वे सभी इस दिशा में सार्थक प्रयास भी कर रहे हैं। भारतीय मनीषी और राष्ट्र के साथ एकात्म भाव रखने वाले महर्षि अरविंद ने विभाजन के असहनीय दर्द को आमजन की दृष्टि से देखने का आध्यात्मिक प्रयास किया। तब उनकी आंखों के सामने अखंड भारत का स्वरूप दिखाई दिया। तब उन्होंने कहा था कि देर कितनी भी हो जाए, पाकिस्तान का विघटन और उसका भारत में विलय होना निश्चित है। राष्ट्र के प्रति इसी प्रकार का एकात्म भाव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी के जीवन में भी दृष्टव्य होता रहा। वे अपने शरीर को भारत देश की प्रतिकृति ही मानते थे। जब भी देश पर कोई संकट आता था, तब उनके शरीर में वैसा ही कष्ट होता था। इसलिए कहा जा सकता है कि उनको राष्ट्र की समस्याओं का पूर्व आभास भी होता था। जहां तक अखंड भारत की बात है तो यह मात्र कहने भर के लिए ही नहीं, बल्कि एक शाश्वत विचार है। वह आज भी भारत की हवा में गुंजायमान होता रहता है। विचार करने वाली बात यह भी है कि जब भारत के टुकड़े नहीं हुए थे, तब हमारा देश पूरे विश्व में ज्ञान का आलोक प्रवाहित कर रहा था। विश्व का सर्वश्रेष्ठ ज्ञान भारत के संत मनीषियों के पास विद्यमान था। इसलिए भारत के सिद्ध संत केवल भारत के संत न होकर जगद्गुरु के नाम से विख्यात हुए। उनकी दृष्टि में पूरा विश्व एक परिवार की तरह ही था। इतिहास का अध्ययन करने से पता चलता है कि महाभारत कालीन गांधार देश यानी आज का अफगानिस्तान वर्ष 1747 में भारत से अलग हो गया। इसी प्रकार 1768 से पूर्व नेपाल भी भारत का अंग ही था। 1907 में भारत से अलग होकर भूटान देश बना। 1947 में पाकिस्तान का निर्माण हुआ। 1948 में श्रीलंका अस्तित्व में आया। इसी प्रकार पाकिस्तान से अलग हुआ बांग्लादेश 1971 में एक अलग देश के रूप में स्थापित हुआ। जरा विचार कीजिए ये सभी देश आज भारत का हिस्सा होते तो भारत की शक्ति कितनी होती? आज कोई अखंड भारत की बात करता है तो कई लोग इसे असंभव कहने में संकोच नहीं करते। यहां पहली बात तो यह है कि हम किसी देश को छीनने की बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि अपने देश के विभाजित भाग को भारत में मिलाने की ही बात कर रहे हैं। कभी भारत के हिस्से रहे देशों को भारत में मिलाने की बात करना असंभव नहीं माना जा सकता। आज धीरे ही सही, लेकिन भारत उस दिशा की ओर बढ़ता दिख रहा है। जबकि जो देश भारत से अलग हुए हैं, उनमें से अधिकांश देश बहुत बुरे दौर से गुजर रहे हैं। श्रीलंका की स्थिति सबके सामने आ चुकी है। पाकिस्तान भी उसी राह पर बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। बांग्लादेश में भुखमरी के हालात हैं। अफगानिस्तान खौफ के वातावरण में जी रहा है। सवाल यह उठता है कि इन देशों को भारत से अलग होने के बाद क्या मिला? जवाब है- कुछ नहीं।

वर्तमान में भारत में स्वतंत्रता का अमृत

महोत्सव मनाया जा रहा है। चारों तरफ राष्ट्रभक्ति का ज्वार उफन रहा है। देश की जनता ने इस महोत्सव को एक मेले का रूप प्रदान किया है। इसमें राष्ट्रीय एकता का भाव भी है तो भारत की संस्कृति का प्रवाह भी। भारतीय संस्कृति सबको जोड़ने का प्रयास करती है, जबकि अन्य संस्कृति में विश्व बंधुत्व का भाव नहीं है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति के माध्यम से पूरे विश्व को एक ऐसी दिशा का बोध कराया जा सकता है, जहां शांति भी है और प्रगति के रास्ते भी हैं। अब इस दिशा में और अधिक तेजी से कदम बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिए अमृत महोत्सव से अच्छा अवसर हो ही नहीं सकता। इसलिए सभी भारतीय नागरिक इस दिशा में आगे आकर उस प्रवाह में शामिल होने का प्रयास करें, जो भारत को अखंड बनाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। अखंड भारत की संकल्पना जहां भारत को ठोस आधार प्रदान करने में सहायक होगा, वहीं यही आधार भारत को पुन- विश्व गुरु के सिंहासन पर आसीन करेगा, यह तय है।

संपादकीय

लोकसभा स्पीकर और राज्यसभा सभापति से सीधे क्यों भिड़ने लग गया है विपक्ष?

संसद का मॉनसून सत्र इस बात के लिए खासतौर पर याद किया जायेगा कि इस दौरान कई बार ऐसा देखने को मिला कि लोकसभा में स्पीकर ओम बिरला और राज्यसभा में सभापति जगदीप धनखड़ से विपक्षी सदस्यों ने जानबूझकर उलझने का प्रयास किया। दोनों सदनों के सभापतियों पर विपक्ष ने तमाम तरह के आक्षेप लगाने के लिए कई तरह के हथकंडे अपनाये। संभवतः ऐसा इसलिए किया गया ताकि आसन की निष्पक्षता को संदेह के कठघरे में खड़ा किया जा सके। खास बात यह है कि विपक्षी सदस्यों ने सदन की सदस्यता की शपथ लेते समय संविधान की प्रति हाथ में ले रखी थी लेकिन उसी संविधान के नियमों से बनी सदन के संचालन की नियम पुस्तिका में लिखे निर्देशों का पालन करने में वह कोताही बरतते हैं। ताजा मामला समाजवादी पार्टी की सांसद जया बच्चन का है जिन्होंने राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ को नाहक ही विवाद में घसीटा कर गलत परम्परा कायम की। इस बार के सत्र के दौरान दोनों सदनों की कार्यवाही पर गौर करेंगे तो ऐसा लगेगा कि सरकार को छोड़ कर विपक्ष अब लोकसभा स्पीकर और राज्यसभा सभापति से सीधे भिड़ते रहने की रणनीति पर चल रहा है। इसके अलावा, इस बार यह भी देखने को मिला कि विभिन्न विधेयकों पर चर्चा के दौरान एक दूसरे पर हमला कर रहे पक्ष-विपक्ष के नेता मूल मुद्दों और समस्याओं पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे थे। नेताओं के संबोधनों में सुर्खियों में आने लायक और उनके भाषणों को वायरल बनाने लायक सामग्री तो थी लेकिन देश की वर्तमान समस्याओं का हल सुझाने या भविष्य की जरूरतों को पूरा करने वाले सुझावों का नितांत अभाव था। देखा जाये तो संसद की कार्यवाही के संचालन पर देश का करोड़ों रुपया खर्च होता है इसलिए सांसदों को चाहिए कि वह सिर्फ अपने राजनीतिक प्रभुत्व को बढ़ाने पर ध्यान देने की बजाय जनहित के मुद्दों को उठाने और जनता की समस्याओं का हल निकलवाने को प्राथमिकता दें। हालांकि वर्तमान लोकसभा में एक बात यह अच्छी नजर आ रही है कि सरकार के साथ-साथ विपक्ष भी खूब सक्रिय नजर आ रहा है। पिछली दो लोकसभा में चूंकि औपचारिक रूप से कोई नेता प्रतिपक्ष ही नहीं था इसलिए विपक्ष प्रभावी भूमिका में नहीं दिख रहा था। उस समय संसद में बिना बहस के ही कई अहम विधेयक पारित हो जा रहे थे। लेकिन अब लोकसभा में विपक्ष का नेता बनने के बाद से राहुल गांधी जिस तरह जनहित के मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठा रहे हैं उससे सरकार अपने मन मुताबिक काम नहीं कर पा रही है।

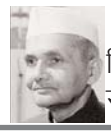

लाल बहादुर शास्त्री: लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 1904 में मुगलसराय, उत्तर प्रदेश में हुआ था। भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, वे 1964 में भारत के दूसरे प्रधानमंत्री बनने से पहले गृह मंत्री के पद पर बने रहे। वे एक शांत लेकिन सक्रिय स्वतंत्रता सेनानी थे, भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया, और अपने विश्वासों के लिए कारावास भी सहा।

विभाजन के दर्द की अनदेखी तस्वीर

ट्रेनों में ठूंसकर गए, शरीर छुपाने के कपड़े तक छिन गए

न्यूज क्राइम फाइल

इंदौर में विभाजन विभीषिका विषय पर प्रदर्शनी लगी है। जिसमें भारत-पाकिस्तान के विभाजन के वक्त की कई बातों को पोस्टर के माध्यम से दर्शाया गया है। कई पोस्टर इस प्रदर्शनी में लगाए है। इस प्रदर्शनी में रेल गाड़ियों के ऊपर बैठकर पलायन से लेकर 4 जून को आयोजित लॉर्ड माउंटबेटन की प्रेस कॉन्फ्रेंस और द्वितीय विश्वयुद्ध की तबाही के समान ध्वस्त किए जाने के बाद लाहोर का नाटा बाजार सहित अमृतसर की ध्वस्त इमारतों को भी दिखाया गया है। डाक विभाग ने जीपीओ पोस्ट ऑफिस में विभाजन विभीषिका प्रदर्शनी लगाई है। यह प्रदर्शनी आगामी 14 अगस्त तक के लिए यहां लगी है। अगर आप प्रदर्शनी देखना चाहते है तो यहां जाकर विभाजन विभीषिका प्रदर्शनी देख सकते है। यह पूरी तरह निःशुल्क है। यह प्रदर्शनी लगाने की मुख्य वजह नई पीढ़ी को यह बताना है कि हमें आजादी किस तरह मिली।

पत्रकार बनने का सुनहरा अवसर

अगर आपके अंदर लिखने का कौशल है और पत्रकारिता में रुचि है, तो 'न्यूज क्राइम फाइल' को आपकी तलाश है। 'न्यूज क्राइम फाइल' से जुड़ कर आप हर माह दस हजार रुपये तक कमा सकते हैं। 'न्यूज क्राइम फाइल' भोपाल, ग्वालियर, सतना, सागर, जबलपुर, इंदौर, उज्जैन, मंदसौर और नीमच में ब्यूरो ऑफिस खोलने जा रहा है। इच्छुक उम्मीदवार तत्काल हमें अपना बॉयोडाटा मेल करें या व्हाट्सअप करें।

उदय प्रताप सिंह चौहान (संपादक) 07223003441
संजीव कुमार (ब्यूरो प्रभारी भोपाल) 08224965455
email: newscrimefile@yahoo.com

सुभाष चंद्र बोस: सुभाष चंद्र बोस, जिन्हें नेताजी के नाम से जाना जाता है, का जन्म उड़ीसा में हुआ था। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए और सविनय अवज्ञा आंदोलन का हिस्सा थे। जब गांधीजी के अहिंसक दृष्टिकोण से कोई फर्क नहीं पड़ा, तो उन्होंने जर्मनी से मदद मांगी और आज़ाद हिंद सरकार और आईएनए की स्थापना की।

न्यूज क्राइम फाइल

www.newscrimefile.com

परिवार की ओर से

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस

एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

आयुष सिंह चौहान
स्टेट हेड न्यूज क्राइम फाइल

उदय प्रताप सिंह चौहान
डायरेक्टर न्यूज क्राइम फाइल

भगत सिंह : भगत सिंह एक प्रसिद्ध भारतीय क्रांतिकारी और एक विवादास्पद व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने देश के लिए गर्व से खुद को शहीद कर दिया। उन्होंने 1921 में असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और पंजाबी युवाओं में देशभक्ति की भावना जगाने के लिए नौजवान भारत सभाफ़ की स्थापना की।

सतगुरु बस सर्विस

शादी, पार्टी, तीर्थ यात्रा के लिए संपर्क करें।
मो.7694955507, 9300783562
दुकान नं. 1 समानान्तर रोड नादरा बस स्टैंड भोपाल

सभी देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस एवं
रक्षाबंधन की हार्दिक
शुभकामनाएं

मदन लाल साहू

कपिल साहू

सरोजिनी नायडू : भारत की सबसे अविश्वसनीय महिला स्वतंत्रता सेनानियों में से एक सरोजिनी नायडू थीं, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष थीं, जिन्होंने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने गांधीजी के अहिंसक आंदोलन के संदेश को यूएसए तक पहुंचाया और 1930 में जब गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया तो उन्होंने नेतृत्व संभाला।

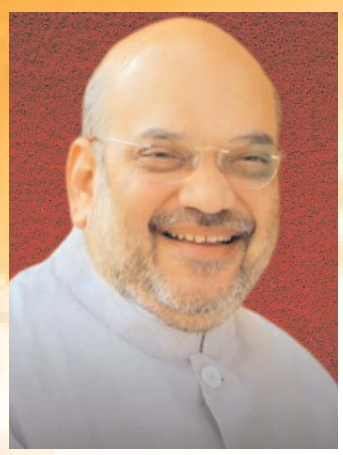

सभी देशवासियों को **स्वतंत्रता दिवस**
एवं **रक्षाबंधन** की हार्दिक शुभकामनाएं

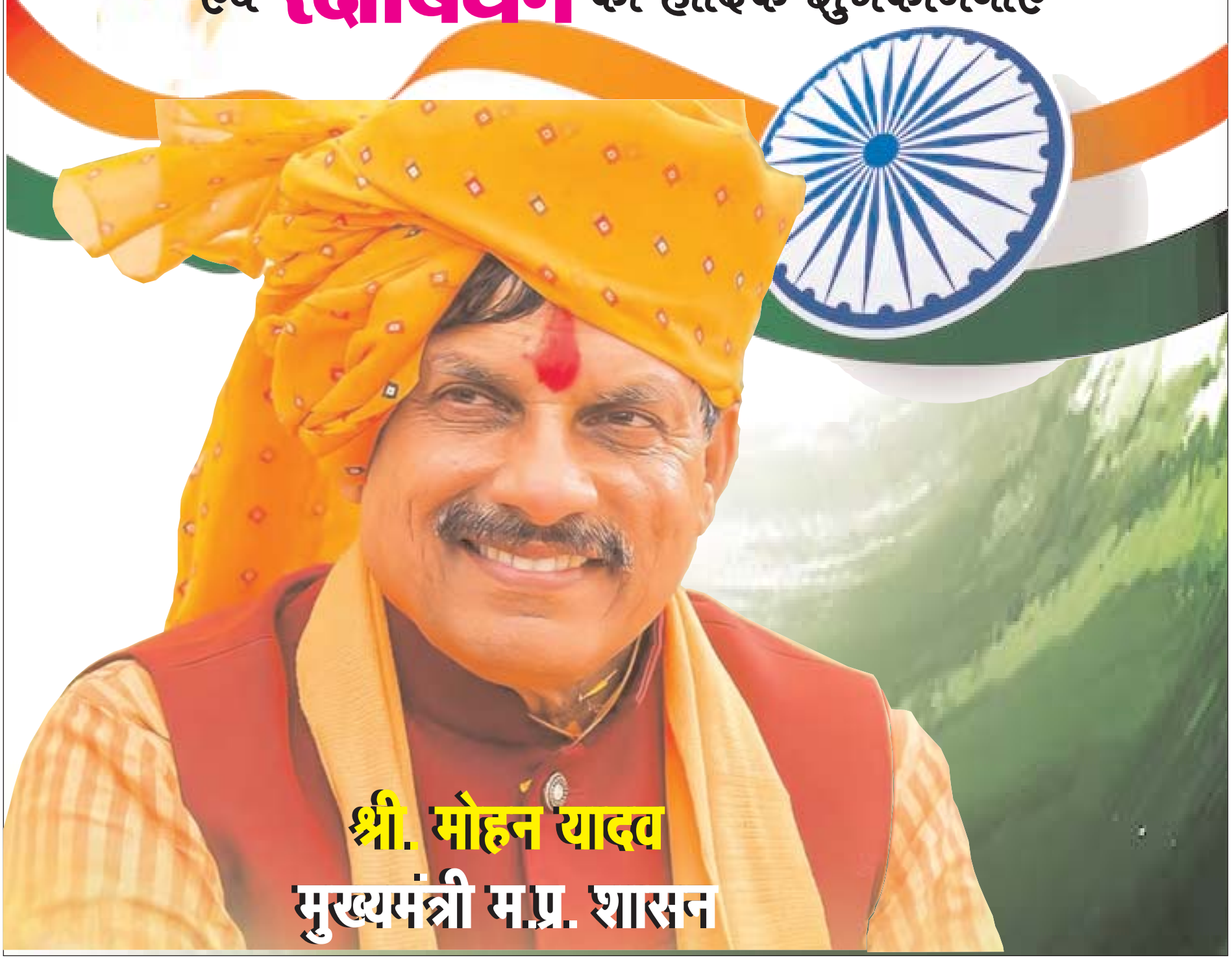

श्री. मोहन यादव
मुख्यमंत्री म.प्र. शासन

रानी लक्ष्मी बाई : रानी लक्ष्मी बाई, जिन्हें झांसी की रानी के नाम से भी जाना जाता है, भारत की शीर्ष 10 स्वतंत्रता सेनानियों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, वह एक योद्धा थीं जिन्होंने भारतीय लोगों के मन को गहराई से प्रभावित किया। उनकी बहादुरी ने कई लोगों को विदेशी शासन के खिलाफ उठने के लिए प्रेरित किया।

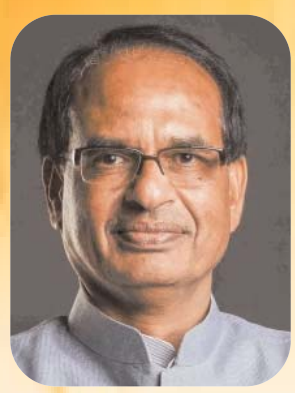

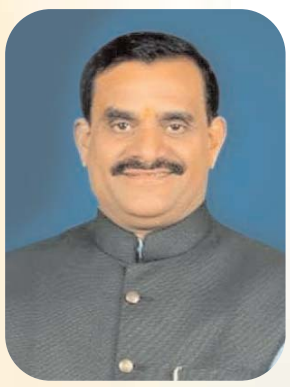

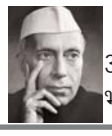

जवाहर लाल नेहरू: भारत के स्वतंत्रता सेनानियों में से एक ,स्वतंत्रता के लिए उनका जोश महात्मा गांधी के भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने के प्रयासों से काफी प्रभावित था। एक वकील के रूप में शुरुआत करने वाले नेहरू एक राजनेता और भारतीय स्वतंत्रता के पैरोकार के रूप में प्रमुखता से उभरे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया ।

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

श्री. भूपेंद्र सिंह
विधायक खुरई, पूर्व कैबिनेट मंत्री

मंगल पांडे : मंगल पांडे ने अपने साथी भारतीयों को मारो फिरंगी को के शक्तिशाली वाक्यांश से प्रेरित किया। उनके साहसी विद्रोह ने 1857 के महान विद्रोह और भारतीय विद्रोह को उत्प्रेरित किया, जिसे भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने सिपाही विद्रोह के दौरान युवा भारतीय सैनिकों को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

श्री. गोपाल भार्गव
विधायक रहली, पूर्व कैबिनेट मंत्री

अभिषेक गोपाल भार्गव
युवा भाजपा नेता

सरदार वल्लभ भाई पटेल: भारत के शीर्ष 10 स्वतंत्रता सेनानियों में से एक सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को हुआ था, जिन्हें छोटी उम्र से ही उनकी असाधारण बहादुरी और नेतृत्व क्षमता के लिए भारत के लौह पुरुष और भारत के बिस्मार्क की उपाधियाँ मिलीं। उन्होंने भारत की आज़ादी के लिए लड़ने के लिए कानूनी पेशे को छोड़ दिया।

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक उदय प्रताप सिंह चौहान द्वारा कविता ऑफसेट प्रिंटर्स, एमपी नगर जोन -1 भोपाल (म. प्र.) से मुद्रित एवं 1209 पुष्पा नगर चांदबड़, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- उदय प्रताप सिंह चौहान, मो.7223003441 (प्रति सोमवार को प्रकाशित) समाचारों से संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं। (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।) RNI.NO MPHIN/2015/63623